❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।।

– यजु. 5/25

हे प्रभो! हमसे द्वेष के भावों और कृपणता को दूर करो।

O God ! Drive away hatred and thanklessness from our lives.

वर्ष 42, अंक 28 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 जून, 2019 से रविवार 9 जून, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई–मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर 2–3–4–5 जून को

सैंकड़ों सार्वजनिक स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञों के आयोजन सम्पन्न

सभी सहयोगी आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं, कार्यकर्ताओं, आयोजकों एवं यजमानों को बधाई

पत्रकों का वितरण करके यज्ञ पर वैज्ञानिक शोध के परिणामों से लोगों को अवगत कराया

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर अधिकांशतया: दिल्ली की आर्यसमाजों द्वारा पर्यावरण शुद्धि यज्ञों का सुंदर आयोजन किया गया। पर्यावरण संरक्षण के लिए विशेष यज्ञों का आयोजन आर्यसमाज के बाहर पार्कों, सड़कों, चौराहों और सोसाइटियों में, सार्वजनिक स्थलों पर किया गया। इस महान परोपकारी कार्य के लिए दिल्ली सभा की ओर से पर्यावरण शुद्धि पर प्रकाशित बैनर सभी समाजों को प्रदान किए गए तथा सभा की ओर से मांग एवं आश्यकता अनुसार पुरोहितों की व्यवस्था भी की गई। क्योंकि आर्य समाज का लक्ष्य और उद्देश्य केवल एक ही है किसी भी तरह से पर्यावरण शुद्धि के प्रति समाज में जागरूकता आए और सभी महानुभाव यज्ञ के महत्व को समझें, अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत हों, यज्ञ करें और कराएं, यज्ञ ही एक ऐसा अद्भुत वैदिक विज्ञान है, जिससे पर्यावरण शुद्धि की कल्पना साकार हो सकती है।

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में सभा ने 2 से 5 जून तक 4 दिवसीय यज्ञ के कार्यक्रम सुनिश्चित किए थे। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि लगातार चार दिनों तक विभिन्न आर्यसमाजों द्वारा बड़े उमंग, उत्साह और उल्लास से यज्ञों के आयोजन धूम–धाम से किए गए। कहीं कहीं पर एक–एक आर्यसमाज ने प्रतिदिन के हिसाब से दो स्थानों पर यज्ञों का आयोजन किया। इससे भी बड़ी प्रेरक बात यह रही कि स्कूलों में जा–जाकर यज्ञों के आयोजन किए और बच्चों को यज्ञ का महत्व बताया तथा उनसे यज्ञ में आहुतियां दिलवाई।

हमारी वैदिक परम्परा हमें यही सिखाती है कि संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। इसलिए समाज के कल्याण हेतु उत्तम कर्मों का

– शेष पृष्ठ 4 पर

आर्यसमाज दुर्गापार्क द्वारा पार्क में एवं कालोनियों सहित छह स्थानों पर यज्ञ किया गया

आर्यसमाज पंखा रोड सी–3 जनकपुरी द्वारा यज्ञ

विश्व पर्यावरण दिवस
5 जून पर विशेष

पर्यावरण संरक्षण हेतु आर्य समाज का आह्वान

.........रामायण में वर्णन आता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में जाकर राक्षसों से उनके यज्ञ की रक्षा की और स्वयं अश्वमेध आदि अनेक बड़े यज्ञ किए। महर्षि बाल्मीकि के आश्रम में माता सीता के साथ लव और कुश यज्ञ किया करते थे। इसी तरह योगेश्वर श्रीकृष्ण यज्ञ प्रेमी थे और महाभारत काल में पाण्डवों ने कई बार बड़े–बड़े यज्ञ किए। यह सब जानते हैं कि पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में स्वयं श्रीकृष्ण ने झूठे पत्तल उठाने की सेवा की थी। हमारे जन्म से लेकर मरण तक सोलह संस्कार यज्ञ से ही पूर्ण होते हैं। इससे पता चलता है कि हमारी संस्कृति और सभ्यता का मूल आधार यज्ञ है।........

हमारी वैदिक संस्कृति में ऋषि–मुनियों की प्रार्थनाओं में अद्भुत उदारता के दर्शन होते हैं– सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: हे प्रभु, सब सुखी हों, सब नीरोग हों, जैसी प्रार्थनाएं हमारे यहां की जाती हैं। अपने साथ सबके स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना हमारा कर्त्तव्य भी है और परंपरा भी। किंतु हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता हमें यह संदेश भी देती है कि केवल प्रार्थना करने से सफलता नहीं मिला करती। जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए प्रार्थना के साथ पूरी शक्ति से कर्म करने की आवश्यकता होती है। इसलिए पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति के महान परोपकारी सेवा कार्य में सबके हाथ लगें, सब सहयोगी बनें।

1. हर वर्ष प्रत्येक व्यक्ति को एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए, पौधा चाहे छायादार हो, फलदार हो अथवा घर में, गमलों में फूल वाला, औषधीय पौधा, तुलसी, एलोवेरा, गिलोय आदि का पौधा अवश्य उगाना चाहिए। एक वृक्ष एक मनुष्य की सम्पूर्ण आयु के लिए ऑक्सीजन प्रदान करता है तथा हवा, जल और ध्वनि के प्रदूषण के साथ–साथ धूल को भी रोकता है।

2. निजी वाहनों का आवश्यकतानुसार प्रयोग हितकर है। एक–एक घर में सबकी अलग–अलग गाड़ियों के चलन पर रोक होनी चाहिए। सिंगापुर जैसे देश में गाड़ी खरीदना वहां की सरकार ने कठिन कानून लगाकर पर्यावरण प्रदूषण को रोकने की पहल की है। इस तरह की पहल हमारे यहां भी लागू की जा सकती है।

3. अपनी कालोनी में, घर में कूड़े को जलाने से परहेज सबको करना चाहिए।

4. अपने घर में, आस–पास तथा कार्यालयों में साफ–सफाई रखने का प्रयास सबको करना चाहिए।

5. भारत सरकार द्वारा संचालित स्वच्छ भारत अभियान के नियमों को पूरी तरह पालन करना चाहिए।

6. प्रतिदिन अग्निहोत्र–यज्ञ करने की परंपरा का पालन करना चाहिए। कुछ लोगों का कहना है कि यज्ञ करने से भी तो धुंआ निकलता है, प्रदूषण फैलता है। यह बिलकुल गलत धरणा है, यज्ञ के पवित्र धुंए से जो थोड़ा–बहुत प्रदूषण होता है, उसे तो पेड़–पौधे जल्दी सोख लेते हैं और यज्ञ के सुगंधित धुंए से पेड़–पौधों में कार्बन–डाई–ऑक्साइड को खींचने की क्षमता शक्ति बढ़ती है।

आओ मिलकर करें हवन, प्रदूषण का करें दहन

सत्य सनातन वैदिक संस्कृति के अनुसार यज्ञ परंपरा उतनी ही प्राचीन है, जितना कि मानव जीवन। सृष्टि के आरंभ से हम यज्ञ करते आ रहे हैं। प्राचीन समय समय में नित्य प्रति हर घर में, आश्रमों में, शिक्षा के स्थल गुरुकुलों में और ऋषि–मुनियों के तपोवनों में यज्ञ करने का नियम था। उस समय राजा–प्रजा, गुरु–शिष्य, व्यापारी–कर्मचारी सब यज्ञ किया करते थे। रामायण में वर्णन आता है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में जाकर राक्षसों से उनके यज्ञ की रक्षा की और स्वयं अश्वमेध आदि अनेक बड़े यज्ञ किए। महर्षि बाल्मिकि के आश्रम

– शेष पृष्ठ 8 पर

वेद-स्वाध्याय

भूत और भव्य द्वारा पाप से मुक्ति

यदि जाग्रद् यदि स्वपन्नेन एनस्योऽ करम्।
भूतं मा तस्माद् भव्यं च द्रुपदादिव मुञ्चताम्।।- अथर्व० 6/115/2
ऋषिः - **ब्रह्मा**।। देवता - **विश्वेदेवाः**।। छन्दः - **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ - यदि = यदि **जाग्रत्** = जागते हुए यदि **स्वपन्** = यदि सोते हुए **एनस्यः** = मैं पापी बन **एनः** = पाप **अकरम्** = करता हूँ तो **तस्मात्** = उस पाप से **मा** = मुझे **भूतं भव्यं च** = भूत और भव्य, भूत और भविष्य का चिन्तन **द्रुपदात् इव** = जैसे काठ से, पाद-बन्धन से छुड़ाया जाता है उस तरह **मुञ्चताम्** = छुड़ा देवें, मुक्त कर देवें।

विनय-हे भूत और भव्य! तुम मुझे सदैव पाप से मुक्त करो। मैं जागते या सोते हुए जो पाप करता हूँ, पापी बनता हूँ, उससे मुक्त करो। जाग्रदवस्था में इस स्थूल वैश्वानरलोक में ठहरता हुआ मैं जो स्थूल पाप करता हूँ अथवा स्वप्नावस्था में सूक्ष्म तेजस लोक में रहता हुआ जो सूक्ष्म मानसिक पाप करता हूँ, उससे मैं बँध जाता हूँ। जैसे द्रुपद में, पाद-बन्धन में पड़ जाने से मनुष्य के पैर ऐसे जकड़ जाते हैं कि वे आगे हिल नहीं सकते, उसी प्रकार सूक्ष्म या स्थूल पाप कर लेने पर हमारे उन्नति के पग ऐसे रुक जाते हैं कि जबतक हमारी उससे मुक्ति न हो जाए तबतक हम तनिक भी नहीं बढ़ सकते, उन्नत नहीं हो सकते। इससे छुटकारा पाने के लिए मैं अपने भूत और भव्य से प्रार्थना करता हूँ। मेरा भूत, अपने भूत का आत्म-निरीक्षण तथा मेरा भव्य, अपने भव्य के लिए दृढ़ निश्चय, ये दोनों मुझे पाप-बन्थन से छुड़ा देवें। पाप हो जाने पर तबतक कि हम भूत के पश्चात्ताप और भविष्य के लिए दृढ़ निश्चय न कर लेवें तब तक हम उससे मुक्त नहीं हो सकते और आगे नहीं बढ़ सकते। ओह, मेरा आदिकाल से आनेवाला विशाल भूत और अनन्तकाल तक पहुँचनेवाला विशाल भव्य, इन दोनों के अपार काल-समुद्र में मैं अपनी चिन्तनरूपी डुबकी लगाकर अपने सब पाप-मैल को धो डालूँगा। मैं इस भूत के लोक-स्थूललोक के पूरे-पूरे निरीक्षण द्वारा अपने-आपको इतना कार्यदक्ष, सावधान और सदा जागरूक बनाऊँगा कि आगे के जाग्रत् के स्थूल पापों से सदा बचता रहूँगा तथा भव्य के दूसरे सूक्ष्मलोक की सहायता से इतनी मानसिक दक्षता प्राप्त कर लूँगा कि मुझसे असावधानी में बिना जाने, स्वप्नावस्था में होनेवाले मानसिक पाप भी आगे से न हो सकेंगे। एवं, यह भारी साधना कर लेने पर मेरे भूत और भव्य मुझे क्रमशः जाग्रत् और स्वप्नावस्था के पाप-बन्धनों से मुक्त करते रहेंगे, सदा मुक्त करते रहेंगे।

- साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सरकार द्वारा विद्यालयों में त्रिभाषा फार्मूला लागू करने सम्बन्धी विवाद का मामला

नई शिक्षा नीति : हिन्दी पर भारी राजनीति

नई शिक्षा नीति में कितनी नीति कितनी है और राजनीति कितनी यह तो समय आने पर पता चलेगा। किन्तु इस नीति से हिंदी भाषा की जो दुर्दशा होने वाली है उसका हाल अभी दिख रहा है। केंद्र सरकार ने नई शिक्षा नीति के प्रारूप में त्रिभाषा फॉर्मूले को लेकर उठे विवाद के बीच सोमवार को नई शिक्षा नीति का संशोधित प्रारूप जारी कर दिया है। नई शिक्षा नीति के तहत गैर हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी अनिवार्य किए जाने का उल्लेख नहीं है। यानि अब जो राज्य या स्कूल अगर हिंदी भाषा को अपने यहाँ लागू नहीं करता, तो उस पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं होगा।

इससे पहले के प्रारूप में समिति ने गैर हिंदी प्रदेशों में हिंदी की शिक्षा को अनिवार्य बनाने का सुझाव दिया था। जिसका तमिलनाडु में द्रमुक और अन्य दलों ने नई शिक्षा नीति के प्रारूप में त्रिभाषा फॉर्मूले का विरोध किया था और आरोप लगाया था कि यह हिंदी भाषा थोपने जैसा है। असल में केंद्र सरकार एक त्रिभाषा सूत्र लेकर आगे बढ़ रही थी जिसमें प्रांतीय भाषा, राजभाषा हिंदी और अंग्रेजी शामिल थी। जवाहरलाल नेहरु के जमाने में बने इस सूत्र को तमिल पार्टियों ने तब भी रद्द कर दिया था और 1965 में लालबहादुर शास्त्री के जमाने में हिंदी के विरोध में इतना बड़ा तमिल आंदोलन हुआ था कि उसमें दर्जनों लोग मारे गए और सरकार ने त्रिभाषा सूत्र को बस्ते में डाल दिया था।

इस बार भी ऐसा प्रतीत हो रहा है कि नरेन्द्र मोदी की मजबूत बहुमत वाली और राष्ट्र हित के नाम पर चुनाव जीतने वाली सरकार ने घुटने टेक दिए हो। क्योंकि यदि ये विरोध ा दक्षिण भारत के प्रबुद्ध लोग, विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता, या युवावर्ग की ओर से होता तो समझ में आता। ये विरोध सिर्फ तमिलनाडु के राजनितिक दल कर रहे है जो समझ से परे है। जैसे पिछले सत्तर साल से हिंदी भाषा पर आघात पहुंचाया गया है एक बार वैसा ही पुनः देखने को मिल रहा है। न इस मुद्दे पर उत्तर भारत का कोई राजनितिक दल अपना मुंह खोल रहा है और न ही इस पर संघ के संचालकों की भी कोई भूमिका सामने आई है, बल्कि उनकी ओर से भी मौन स्वीकृति कही जा रही है।

देखा जाये तो भारत धर्मप्राण देश है हमारे धर्म, संस्कृति व प्राचीन साहित्य का माध्यम संस्कृत तथा हिंदी भाषा है। किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व, उसकी संस्कृति, उसकी सभ्यता उसका धर्म यह सब उस राष्ट्र की मात्रभाषा से जुड़े होते है, यदि मात्रभाषा का ही वध कर दिया जाये तो यह सब चीजें कितने दिन जीवित रहेगी स्वयं विचार कीजिए? हमने 70 वर्ष पहले बलिदान देकर राजनैतिक स्वतन्त्रता पाई थी लेकिन ये 70 वर्ष बीत जाने के बाद भी हमारी हिंदी भाषा स्वतन्त्र नहीं हो पाई है। चुनाव से समय राजनेता मंचो से हिंदी में भाषण देते है, हिंदी भाषा के माध्यम से वोट बटोरते हैं जब सत्ता की देहरी पर पहुँच जाते है तब अचानक इस भाषा से मुंह मोड़ लेते है।

यदि आज भाषा के प्रश्न पर आप गंभीरता से विचार करें तो पूरे भारत में त्रिभाषा सूत्र बिलकुल एक पाखंड की तरह दिखाई देगा। आखिर क्यों त्रिभाषा सूत्र में अंग्रेजी को ढोया जा रहा है जबकि राष्ट्र की एकता अखंडता के लिए त्रिभाषा की जगह द्विभाषा सूत्र लागू किया जाना चाहिए था। यानि अपनी प्रांतीय भाषा सीखो और हिंदी भारत-भाषा सीखो इसके बाद जो राज्य सरकार या स्कूल अंग्रेजी रखना चाहें रख सकता है। इसकी उसे स्वतंत्रता प्रदान कर देनी चाहिए।

असल में यह रोग उसी समय हमारे तत्कालीन नेताओं ने पैदा कर दिया था जब उन्होंने भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग को स्वीकार किया था। भले ही यह उस समय की राजनितिक अदूरदर्शिता रही हो। लेकिन राज्यों के गठन में जैसे सभी राज्यों ने रुपये को राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में स्वीकार किया था उसी तरह उस समय ऐसी संवैधानिक व्यवस्था बना देनी थी कि केन्द्र सरकार की राजभाषा को सभी राज्यों की राजभाषा मानी जाए। किन्तु ऐसा नहीं हो सका और भाषावार राज्यों की मांग को स्वीकार किया गया जिसका दंश आज हिंदी भाषा सबसे ज्यादा झेल रही है।

.....देश में हिंदी समझने और बोलने वालों की संख्या लगभग 70 करोड़ के आस-पास है। देश से बाहर भी लाखों लोग इसे जानते-समझते हैं, प्रयोग करने वालों की संख्या के लिहाज से यह चीन की भाषा के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। लेकिन इसके बावजूद भी हिंदी को कमजोर अनपढ़ गरीब लोगों की भाषा बना दिया गया। क्या 70 करोड़ लोग कम होते हैं? एक भाषा को समझने बोलने के हिसाब से कि वह अपने देश की राजभाषा भी न बन सके? शायद इतनी जनसँख्या समूचे यूरोपीय देशों की है। वर्तमान में संख्याबल के अनुसार भी हिंदी उन सभी भाषाओं में सबसे शीर्ष स्थान पर है जो भारत में प्रचलित है, इसलिए भारतीय के परिचायक के रूप में हिंदी को अनिवार्य भाषा बनाया जाए।.....

देखा जाये तो आज देश में हिंदी समझने और बोलने वालों की संख्या लगभग 70 करोड़ के आस-पास है। देश से बाहर भी लाखों लोग इसे जानते-समझते हैं, प्रयोग करने वालों की संख्या के लिहाज से यह चीन की भाषा के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। लेकिन इसके बावजूद भी हिंदी को कमजोर अनपढ़ गरीब लोगों की भाषा बना दिया गया। क्या 70 करोड़ लोग कम होते हैं? एक भाषा को समझने, बोलने के हिसाब से कि वह अपने देश की राजभाषा भी न बन सके? शायद इतनी जनसँख्या समूचे यूरोपीय देशों की है। वर्तमान में संख्याबल के अनुसार भी हिंदी उन सभी भाषाओं में सबसे शीर्ष स्थान पर है जो भारत में प्रचलित है, इसलिए भारतीय के परिचायक के रूप में हिंदी को अनिवार्य भाषा बनाया जाए। हाँ अन्य भारतीय भाषाओं को भी हिंदी के साथ ताल-मेल स्थापित करने की दिशा अनुवाद आदि माध्यम से जोड़ने का प्रबंध किया जाए। यदि स्वतन्त्रता के 70 वर्ष बाद भी यदि हिंदी का स्थान एक ऐसी विदेशी अंग्रेजी भाषा के साथ साझा करना पड़े जिसे भारत में बोलने समझने वाले कुल 5 प्रतिशत लोग भी नहीं तो यह हिंदी का दुर्भाग्य है। इसके अलावा यदि 5 प्रतिशत तमिल भाषी राजनेताओं के सामने राजभाषा को लेकर केंद्र की मजबूत सरकार को घुटने टेकने पड़े तो यह सरकारी कमजोरी है हिंदी की नहीं। -***सम्पादक***

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र

सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth

मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध

प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

अरसे बाद अच्छी खबर

बढ़ती अर्थव्यवस्था, चौतरफा होता विकास इक्कीसवीं सदी में नया भारत लगातार वैश्विक मानचित्र में नए मानक गढ़ कर पूरी दुनिया के सामने नये रूप में हाजिर हुआ है। परन्तु दूसरी और यदि ये भी कहा जाये कि आज भी हर 5 भारतीय में से 1 भारतीय छुआछूत को मानता है तो चौकना स्वाभाविक है। किन्तु इस सच से न तो आप मुंह मोड़ सकते हैं और न ही हम। क्योंकि अभी हाल ही में राजस्थान के धौलपुर जिले की आईएएस नेहा गिरी ने अपने इलाके में जब छूआछूत को देखा तो वह भी चौक गयी। दरअसल मनरेगा के तहत चल रहे एक सरकारी कार्य का निरीक्षण करने के लिए जब डीएम नेहा गिरी पहुंचीं तो उन्होंने देखा कि एक महिला अपने बच्चे के साथ काम पर लगी है, जबकि उससे हट्टा-कट्टा आदमी वहां पानी पिलाने का काम कर रहा है।

इसे देखकर जब उन्होंने इसका कारण पूछा तब पता चला कि वह महिला छोटी जाति से आती है इसलिए कोई उसके हाथ से पानी नहीं पीता। यह सुनकर डीएम नेहा गिरी ने मौजूद लोगों को जमकर लताड़ लगाई और उस महिला के हाथों पानी भी पिया और गांव के लोगों को समझाया कि छुआछूत जैसी कोई चीज नहीं होती है और हर इंसान बराबर होता है। साल 2010 बैच की आईएएस अफसर नेहा गिरी इसके पहले बूंदी और प्रतापगढ़ जिले की कलेक्टर रह चुकी हैं। फिलहाल धौलपुर जिले में डीएम की जिम्मेदारी संभाल रही हैं।

देखा जाये तो भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र मनुर्भव है। किन्तु यह ऊँच-नीच की भावना रूपी हवा के झोंके से बुरी तरह बिखर गया और धीरे-धीरे समाज के लिए एक भीषण कलंक बन गया। इस पूरी घटना को सुनने के बाद ध्यान देने के लायक यह बात भी है कि भारत में संविधान छुआछूत को बहुत सालों पहले ही खत्म कर चुका है पर आज भी अनेकों जगह लोगों के मन में यह कुप्रथा बसी हुई है। अक्सर जातिवाद, छुआछूत और उच्च और निम्न वर्ग के मुद्दे को लेकर धर्मशास्त्रों को दोषी ठहराया जाता है, लेकिन यह बिल्कुल ही असत्य है। क्योंकि जातिवाद छुआछूत प्रत्येक धर्म, समाज और देश में है। हर धर्म का व्यक्ति अपने ही धर्म के लोगों को ऊंचा या नीचा मानता है।

जब छुआछूत की बात आती है तो बहुत से लोग यह सोचते है कि यह कथित ऊँची और निम्न जाति के बीच का फासला है। छुआछूत में दो चार अगड़ी जातियों का नाम लेकर अक्सर यह भ्रम भी समाज में फैलाया जाता है जबकि दलित और पिछड़ी जातियां आपस में छुआछूत मानती हैं। थोड़े समय पहले की एक घटना ने इस सब से पर्दा हटा दिया था। उत्तर प्रदेश के छिबरामऊ के एक सरकारी मिडिल स्कूल में उपद्रव हो गया था यहाँ दलित बस्ती में रहने वाली शांति देवी वाल्मीकि को बच्चों का खाना बनाने के लिए नियुक्त कर दिया गया था। जिसके बाद हंगामा खड़ा हो गया था। गौरतलब बात यह है कि उन दिनों इस सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले ज्यादातर छात्र गरीब, पिछड़े और दलित समुदाय के थे। लेकिन शांति के मोहल्ले में रहने वाले कठेरिया, धोबी एवं अन्य दलित जाति के बच्चों ने भी खाने का बहिष्कार किया था।

इसलिए यह मसला केवल तथाकथित ऊँची और नीची जातियों के बीच सीमित नहीं है। बल्कि अनुसूचित जातियों में भी लोग आपस में छुआछूत मानते हैं। एक दूसरे के बर्तनों से लेकर शादी विवाह में भी इन तबकों में छुआछूत देखी जा सकती है। असल में सामाजिक विज्ञान इसे दो तरह देखता है पहला किसी समय यह गरीब और अमीर के बीच का यह फासला रहा होगा। साफ स्वच्छ रहने वाले लोग मेले कुचेले लोगों से जो समय पर अपने कपड़ों की साफ सफाई से लेकर शरीर की सफाई नहीं रखते थे उनसे फासला रखते होंगे। धीरे-धीरे समाज इसी से हिस्सों में बंटा होगा। इन्हीं कारणों से साफ सफाई का काम करने वालों को अछूत समझा जाता रहा। दूसरा छुआछूत का सर्वप्रथम कारण जातीय भावना का विकास माना जाता है। ऊँच-नीच का भाव यह रोग है, जो समाज में धीरे धीरे पनपता गया और सुसभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की नींव को हिला दिया। इसी कारण कुछ जातियाँ अपने को दूसरी जातियों से श्रेष्ठ मानती हैं। निम्न व्यवसाय वालों को हीन दृष्टि से देखा जाता है जैसे अमेरिकी गोरे, नीग्रो जाति के लोग को हेय मानते हैं। एक समय तो उन्हें अपने आस-पास नहीं फटकने देते थे।

पर समय के साथ आन्दोलन होते गये। आर्य समाज ने इस बीमारी पर सबसे अधिक चोट की। आज स्थिति काफी बदल गयी। समय के परिवर्तन के साथ मनुष्यों के विचारों में भी परिवर्तन हुआ समाज में आर्थिक और शैक्षिक क्रांति आने के बाद आज लोगों की सामाजिक स्थिति आर्थिक तौर पर देखी जाने लगी। यह सही है कि एक समय भारतीय समाज में अनेक कुरीतियां रही हैं लेकिन अब हम सबको समझना होगा हम उस काले अतीत से बाहर आ चुके है और एक सुनहरे भविष्य की ओर आगे बढ़ रहे है। यदि ऐसी बीमारी आज भी कहीं दिखाई दे तो निःसंदेह डी.एम. नेहा गिरी की तरह विरोध करें। लोगों को जागरूक करें ताकि यह बीमारी सिर्फ इतिहास का एक हिस्सा बनकर रह जाये। अफसोस है कि सामाजिक अथवा राजनीतिक संगठनों ने इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर कोई सक्रियता नहीं दिखाई। उल्टा वोट बैंक के लालच में इन बीमारियों को मजबूत कर समाज की गहरी खाई खोद डाली। जबकि सदियों से चली आ रही ऊंच नीच की भावनाएं एक बड़ी सामाजिक बीमारी है और इसलिए इसके निदान पर चौतरफा कार्यवाही होनी चाहिए थी।

- राजीव चौधरी

.....छुआछूत का सर्वप्रथम कारण जातीय भावना का विकास माना जाता है। ऊँच-नीच का भाव यह रोग है, जो समाज में धीरे धीरे पनपता गया और सुसभ्य एवं सुसंस्कृत समाज की नींव को हिला दिया। इसी कारण कुछ जातियाँ अपने को दूसरी जातियों से श्रेष्ठ मानती हैं। निम्न व्यवसाय वालों को हीन दृष्टि से देखा जाता है जैसे अमेरिकी गोरे, नीग्रो जाति के लोग को हेय मानते हैं एक समय तो उन्हें अपने आस-पास नहीं फटकने देते थे। .....

प्रेरक प्रसंग

रैफरी ने आउट कर दिया

उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध आर्यसमाजी वक्ता पण्डित श्री धर्मपालजी शास्त्री ने एक बार सुनाया कि जब 1955 ई. में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी महाराज बम्बई में रुग्ण थे तो उनके देहत्याग से पूर्व एक आर्यविद्वान् श्री महाराज के स्वास्थ्य का पता करने गये। स्वामीजी से स्वास्थ्य के विषय में पूछा तो आपने कहा, छोड़िए इस बात को, सब ठीक ही है। आप अपने सामाजिक समाचार सुनाएँ। यह कहकर स्वामीजी ने चर्चा का विषय पलट दिया।

उस विद्वान् महानुभाव ने पुनः एक बार स्वामीजी के स्वास्थ्य की चर्चा चला दी तो स्वामीजी ने बड़ी गम्भीरता से, परन्तु अपने सहज स्वभाव से कहा, 'स्वास्थ्य की कोई बात नहीं, खिलाड़ी के रूप में खेल के मैदान में उतरे थे। खेलते रहे, खूब खेले। अब तो रैफरी ने आऊट कर दिया।'

मुनि के इस वाक्य को सुनकर उस विद्वान् ने कहा, 'स्वामीजी आप तो कभी आऊट नहीं हुए। अब भी ठीक हो जाएँगे।'

स्वामीजी महाराज ने कहा, 'परन्तु अब तो आऊट हो गये। रैफरी की व्यवस्था मिल गई है।'

मुनियों, गुणियों के जप-तप की सफलता की कसौटी की यही वेला होती है। वेदवेत्ता, आजन्म ब्रह्मचारी, योगी, स्वतन्त्रानन्द का वाक्य, ''खिलाड़ी के रूप में खेल के मैदान में उतरे थे, खेलते रहे, खूब खेले। अब तो रैफरी ने आऊट कर दिया'', मनन करने योग्य है। कौन साधक होगा जिसे यतिराज की इस सिद्धि पर अभिमान न होगा। यह हम सबके लिए स्पर्धा का विषय है। ऋषिवर दयानन्द के अमर वाक्य, ''प्रभु! तेरी इच्छा पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो'', का रूपान्तर ही तो है। आचार्य के आदर्श को शिष्य ने जीवन में खूब उतारा।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

विश्व पर्यावरण दिवस पर दिल्ली में आयोजित आर्यसमाज द्वारा पर्यावरण शुद्धि यज्ञों का विहंगम दृश्य

प्रचार प्रसार इसी तरह होना चाहिए जैसे विश्व पर्यावरण दिवस पर दिल्ली की आर्यसमाजों ने एक मिसाल कायम की है। दिल्ली सभा की ओर से विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित यज्ञीय व्यवस्था में अपना अनुपम योगदान देने वाले यज्ञीय पुरुष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के प्रति कृतज्ञता और आभार हैं, जिन्होंने सुन्दर बैनर और पत्रक प्रकाशित करवाए और आर्यजनों को यज्ञमय जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की। महाशय जी की मान्यता है कि आर्यसमाज द्वारा किए गए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार और यज्ञादि परापकारी सेवा भाव से ही राष्ट्र सहित विश्व का कल्याण सम्भव है।

आर्यसमाज महावीर नगर

आर्यसमाज मयूर विहार-2

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 एस ब्लाक

बर्फखाना चौक मैट्रो स्टेशन के नीचे पार्क में

आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक, हरि नगर एवं हस्तसाल क्षेत्र

महिला आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक पार्क

आर्यसमाज किरण गार्डन

आर्यसमाज सुन्दर विहार

आर्यसमाज हनुमान रोड द्वारा मौलाना आजाद मैडिकल कॉलेज

आर्यसमाज जहांगीरपुरी पार्क

आर्य हंसराज मॉडल स्कूल

एम.सी.डी. स्कूल जहांगीरपुरी आई ब्लाक

आर्यसमाज सूरजमल विहार

आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी द्वारा पौधा वितरण, यज्ञ, भजन एवं प्रवचन

विश्व पर्यावरण दिवस के विहंगम दृश्यों तथा समाचारों का वर्णन आगामी अंकों में भी प्रकाशित किया जाएगा - सम्पादक

ओम्शांति धाम आश्रम, बैंगलुरु कर्नाटक में सात दिवसीय भव्य अभिजित्-सोम याग सुसम्पन्न

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी मुख्य अतिथि एवं विनय आर्य जी विशिष्ट अतिथि के रूप में हुए सम्मिलित

आर्य समाज के प्रकाण्ड विद्वानों के सानिध्य में महान याज्ञिक आत्माओं को यजमान बनने का प्राप्त हुआ सौभाग्य

बैंगलूरू के निकट कावेरी एवं अर्कावती नदियों के पवित्र संगम स्थल पर सुरम्य पर्वत श्रंखलाओं की मनोहारी घाटी की गोद में 60 एकड़ के विशाल भू-भाग पर स्थित ओम्शांति धाम आश्रम जहां पर कन्या गुरुकुल, गौशाला, ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्र, वानप्रस्थ आश्रम, बाल गुरुकुल आदि दिव्य संस्थाएं आर्यसमाज के उत्थान में निरंतर गतिशील हैं। वहां श्री आर्यमुनि जी के द्वारा दिनांक 17 मई से 23 मई 2019 को अभिजित्-सोम याग का भव्य आयोजन किया गया। श्री आर्य मुनि जी एक ऐसे महान व्यक्तित्व के स्वामी हैं जिन्होंने प्रमुख महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य और लक्ष्य बना लिया है। इस अनुपम सेवा कार्य में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती मंजुला अनंत जी, आपके पुत्र श्री जीवन अनंत जी, डॉ. सिद्धार्थ ए.भार्गव जी और श्री अरुण ए आर्य जी, सहर्ष सलंग्न हैं।

महर्षि दयानंद की प्रेरणाओं को सर्वोपरि मानते हुए ओम्शांति धाम में आयोजित, अभिजित् सोम याग के वृहद आयोजन में सैंकड़ों यज्ञ प्रेमी, श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस विशेष यज्ञ में बैंगलूरू की तीनों आर्यसमाज वी.वी.पुरम, मारथ हल्ली, इन्द्रानगर और कनकपूरा नगरी के आर्यजनों तथा धर्मप्रेमी सज्जनों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस विशिष्ट यज्ञ का शुभारंभ ओम् शांति धाम गुरुकुल के ब्रह्मचारियों व आचार्यों द्वारा वेदमंत्रों के उच्चारण से हुआ। सोम याग के विशिष्ट यजमान श्री सुब्रह्मण्यम भट्ट जी एवं श्रीमती वारिजा जी बने। इससे पूर्व भी आपने यजमान दम्पत्ति के रूप में कई महान यज्ञों में यजमान पद को सुशोभित कर अनेक उपाधियां प्राप्त की हैं। जिनमें अग्निहोत्री, सोम-याजी, चयनी, वाजपेयी, साग्निचित सर्वपृष्ट/सर्वपृष्ठय आप्तोर्याम-याजी उपाधियां प्रमुख हैं। इस अभिजित् सोम-याग के अध्वर्यु वेद-ब्रह्मा नागानन्द पुराणिक जी, होता-वेद-ब्रह्मा प्रभाकर जोगलेकर जी, ब्रह्मा-वेद-ब्रह्मा यज्ञपति भट्ट जी, उदगाता-वेद-ब्रह्मा सुब्रह्मण्यम भट्ट सामवेदी जी थे।

इस अवसर पर ओम्शांति धाम के स्नेहिल आमंत्रण पर पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का पदार्पण सभी याज्ञिक आत्माओं के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। महाशय जी ने विशेष संगोष्टि में अपने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि ओम्शांति धाम गुरुकुल में वेद का अध्ययन कर रहे ब्रह्मचारी भविष्य में वैदिक प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ायेंगे और इस तरह वेद की रक्षा और प्रचार-प्रसार से आर्यसमाज का उत्थान होगा। इसके लिए मेरा आशीर्वाद और सहयोग सदा आपके साथ है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए महाशय जी ने 5 लाख, 55 हजार, 500 की विशाल दान राशि देने की घोषणा की और महाशय जी ने अपने करकमलों से वहां प्रस्तावित भव्य अभिकल्पना की योजना के मॉडल चित्र का अनावरण किया। इस विशेष अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि आज समाज के लिए वर्तमान समय में प्रासांगिक, आधुनिक, युगानुकूल वैदिक गुरुकुलों की अत्यंत आवश्यकता है। इस दिशा में ओम् शांति धाम गुरुकुल का योगदान और प्रयास प्रशंसनीय है। मैं हमेशा इस दिशा में राष्ट्रीय व अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर आधुनिक गुरुकुलों की स्थापना और संचालन में सदैव समर्पण के साथ आपके साथ हूं।

इस अवसर पर सारश्वत अतिथि के रूप में श्रीमती प्रो. पदमाशेखर जी, उपकुलपति कर्नाटक संस्कृत विश्व विद्यालय, बैंगलूरू का सम्मान किया गया। दिल्ली से पधारे माननीय अतिथि श्री प्रेम अरोड़ा जी का उद्बोधन सराहनीय रहा। सभा अध्यक्ष और ओम्शांति धाम के संस्थापक, अध्यक्ष, वानप्रस्थी श्री आर्य मुनि जी ने अध्यक्षीय भाषण में सब का आभार व्यक्त किया। गुरुकुल के वरिष्ठ यजुर्वेद-आचार्य विद्वान लंबोदर भट्ट जी ने गुरुकुल का परिचय दिया। श्री नागानंद पुराणिक जी एवं डॉ. श्रद्धा प्रमोद जी ने सोम-याग का महत्त्व बताया। डॉ. सिद्धार्थ ए. भार्गव जी ने 21वीं सदी में आधुनिक गुरुकुल की अभिकल्पना को प्रस्तुत किया। अपने सुमधुर संचालन, वेदघोष, और सामगान द्वारा संगीत रत्ना, आचार्य जहान्वी सिद्धार्थ जी ने सबको मंत्रमुग्ध किया। इस अवसर पर डॉ. राधा कृष्ण वर्मा जी, उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री प्रेम भारद्वाज जी, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री वासुदेव राय जी, उपाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा कर्नाटका, श्री सतीश जैन जी, अध्यक्ष, महाराजा अग्रसेन हॉस्पिटल बैंगलूरू आदि महानुभावों ने अपने उद्बोधन दिए।

ओम्शांति धाम के कार्यदर्शी व महामंत्री वानप्रस्थी श्री सत्यमुनि जी, गुरुकुल की कुलमाता, श्रीमती साधना जवली जी, न्यासी श्री विपिन अग्रवाल जी, प्रेममयी माता श्रीमती मंजुला अनंत जी, न्यासी श्री सुभाष गोयल जी, स्थापित श्री आलुरजी आदि भद्रजनों ने इस कार्यक्रम की सफलता में अत्यंत सर्म्पणभाव से सेवा की। न्यासी डॉ. श्रीधर जी, न्यासी श्री बाला जी, श्री ऋषिमित्र जी, श्री सूरज प्रकाश कुमार जी, श्री इंद्र तलवार जी, मंत्री कुमार अभिमन्यु जी, उपमंत्री दिनेश रावत जी, कोषाध्यक्ष श्री सुशील गुप्ता जी, डॉ. विजय गोविल जी, डॉ. सुनीता गोविल जी, श्रीमती स्नेहलता राखरा जी, श्री बालकृष्ण आर्य जी आदि अनेक महानुभावों ने समय-समय पर मंच की शोभा बढ़ाई तथा कार्यक्रम की सफलता में अतुलनीय सहयोग प्रदान किया।

- सिद्धार्थ भार्गव, संयोजक

(बाएं) अभिजित सोम याग के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं ओमशान्ति धाम के संस्थापक वानप्रस्थी श्री आर्यमुनि, श्री प्रेम अरोड़ा, सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान डॉ. राधाकृष्ण वर्मा, पंजाब सभा के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं क्षेत्रीय कार्यकर्ता एवं अधिकारीगण। (दाएं) ओमशान्ति धाम में प्रस्तावित कार्ययोजना के मॉडल स्वरूप का लोकार्पण करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी एवं अधिकारीगण।

ओमशान्तिधाम आश्रम बैंगलूरु में आयोजित अभिजित सोम याग के समापन समारोह के अवसर पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी एवं श्री प्रेम अरोड़ा जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते श्री सिद्धार्थ भार्गव जी एवं इस अवसर पर उपस्थित क्षेत्रीय जनता, गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं आमन्त्रित अतिथिगण।

Why did the son of Mahatma Gandhi turn to be a Muslim?

The strings of this tale are associated with a great personality of this country whom we call -Bapu, the Father of Indian Nation, the saint of Sabarmati, and also by many other names. The talk is about the time when the Arya Samaj - the country's largest crusader to save the religion and Indian culture - led by many great Aryan leaders including Swami Shraddhanand Ji, were working to bring back their brothers and sisters from Muslim and Christianity to Hindu Vedic religion. Then, the greatest leader of the country - Mahatma Gandhi, stood against them in strong opposition. With open public criticism of this Arya Samaj's – 'Shudhi-Movement (purification mission), Gandhiji was also writing large size articles against it in the newspapers/journals of that time. Its effect was on the thought of those who believe in Islam. It is said that after getting the support of Mahatma Gandhi, they started feeling that whatever right or wrong deeds they are doing for the propagation of Islam, they are justified and the Aryasamaj who opposes their wrong actions are on the fake path.

Shortly after this, there occurs a religious and the political earthquake in the country's, with which Gandhiji, the one who sings the song of Ishwar-Allah tero Naam, also trembles. In fact, these tremors came out of that earthquake in which Mahatma Gandhi's eldest son, Harilal Gandhi, accepted Islam at Nagpur. Harilal had been converted by Muslims in lieu of some undue greed and promise, Harilal got converted as Abdullah Gandhi and in Jumma Mosque of Bombay, his conversion into the Muslim religion was also announced.

When the son of this so-called great saint of Sabarmati becomes a Muslim, there arises an atmosphere of great joy and enthusiasm across the mullahs of the country and abroad, all the Islamic leaders because the person whom they have made the victim of their conversion was not a poor, downtrodden or a backward class, but it was the son of Congress leader Mohandas Karamchand Gandhi, a prominent leader of the nation who even shook the throne of Queen of Great Britain.

On one side, all the moderate and extremist political parties in the country were silent after swallowing the pill of secularism, while on another side due to lack of a large platform for the mass information, this news was away from the public in those days. If anybody was really unhappy about this news, then it was the great Arya Samaj and Gandhiji's wife Kasturba Gandhi. Although Gandhiji was writing letters to the Muslim leaders and was, in fact, demand for the release of his son in a variety of ways, he was pleading that through making Harilal as Abdullah, no benefit will occur to them.

On one hand, Gandhiji was looking for the advantage and disadvantage of Islam, but on the other side, the question was raised that Gandhiji never gave proper education about religion to his own children. Anyways, see the unique transformation of history that the Arya Samaj, which was opposed by Gandhiji, seemed to him the only rescuer. For that, Gandhi's wife, Kasturba, requested to Arya Samaj for purifying her son and appealed to return him back to Vedic religion. And, on the flip side, the son of Mahatma Gandhi, who become Abdullah from Harilal, had also understood the truth inside Islam within these few days. In those days, after listening to two lectures on the topic of 'Excellence of Vedas on Islam', by Shri Vijay Shankar Bhatt of Arya Samaj Bombay, the remaining doubts in Harilal's mind also got clarified.

Where Harilal was lured for various kinds of greed to become a Muslim, the Arya Samaj had made Harilal Gandhi from Abdullah, without any covetousness, greed, and without any false promises.

Now it was the turn of a historical moment that many people were eagerly waiting for. In front of thousands of crowds in the open ground of Bombay, Harilal Gandhi was brought back from being Abdullah by the 'purification movement' of Arya Samaj in the presence of his mother Kasturba and his brothers. After this Harilal told in his speech to the masses that day that it had been the golden day of his life.

He started his speech with Namaste and said, "Namaste! today some people will be surprised to know that why I have resorted back to my Vedic religion. Many Hindus and Muslims will have many things in their mind but I cannot stop myself from sharing my heart. In the current religion, it has not only its doctrines but it also includes the culture, moral and social life of its followers. The true meaning of religion is embedded not only in its beliefs but on- how it influences the culture, decorum and social behavior of those who believe. I had accepted Islam for all these experiments. Now what I have seen and experienced, the Muslims of which I came in contact, behave exactly opposite the beliefs of Islam. Therefore, I can no longer believe in Islam more and I have reached back to place from where I started. If my decision has made my parents, my brothers, my relatives happy, then I would like their blessings. Finally, I apologize to them and urge them to cooperate with me. After this, Harilal Gandhi became an integral part of the Vedic religion and became a member of the Shraddhananda Shuddhi Sabha and was engaged in the purification work of Arya samaj. But if another aspect of this is seen then it was an act of Arya Samaj that saved the country from a stigma on the forehead of its religion and history. ***- Vinay arya***

अब चुप क्यों हैं बाबरी पर शोर मचाने वाले?

थोड़े समय पहले भारत और पाकिस्तान की सरकारों ने करतारपुर कॉरिडोर बनाने का ऐलान किया था। इस ऐलान से दुनियाभर में फैले करोड़ों सिख भाईयों के चेहरे भी खिल उठे थे। लेकिन अब पाकिस्तान से जो खबर आई है उससे एक बार फिर पाकिस्तान ने अपनी मजहबी मानसिकता दिखा दी है। खबर है कि लाहौर से करीब 100 किलोमीटर दूर नारोवाल शहर के बाथनवाला गांव में सदियों पुराने गुरु नानक महल को तोड़ दिया है। इसकी कीमती खिड़कियां, दरवाजे और रोशनदान तक बेच दिए हैं।

पाकिस्तानी अखबार डॉन की खबर के अनुसार इस चार मंजिला इमारत की दीवारों पर सिख धर्म के नींव रखने वाले बाबा नानक और कई हिंदू राजाओं और राजकुमारों की तस्वीरें थीं। इस इमारत में 16 बड़े कमरे थे, जिनमें हर किसी में तीन खूबसूरत दरवाजे और चार वेंटिलेटर थे। "इस पुरानी इमारत को बाबा गुरु नानक जी का महल कहा जाता है भारत सहित दुनिया भर के कई सिख इस इमारत में आते थे" लोगों का आरोप है कि धार्मिक मामलों के विभाग के अफसर भी इसमें शामिल हैं जिन्हें मीडिया द्वारा शरारती तत्व कहा जा रहा है।

असल में पाकिस्तान अल्पसंख्यक समुदाय सिख और हिन्दू भारत में बसे मुसलमानों जितने खुशनसीब नहीं हैं कि इधर कुछ लोगों द्वारा बाबरी का ढांचा गिराया और उधर पूरे विश्व को हिला देने वाली चींखे सुनाई देने लगी। जबकि मस्जिद विवादित थी और उक्त स्थान से करोड़ों लोगों की धार्मिक आस्था भी जुड़ी थी। कमाल देखिये छह दिसंबर, 1992 को बाबरी मस्जिद ढहाए जाने के बाद पाकिस्तान में इसकी प्रतिक्रिया होने में ज्यादा वक्त नहीं लगा था। बाबरी मस्जिद के बाद पाकिस्तान में तकरीबन 100 मंदिर या तो जमींदोज कर दिए गए या फिर उन्हें भारी नुकसान पहुँचाया गया था। इनमें से कुछ मंदिरों में 1947 में हुए बंटवारे के बाद पाकिस्तान आए लोगों ने शरण ले रखी थी। जैन मंदिर से लेकर उन्मादियों ने सभी गैर इस्लामिक धर्म स्थलों को ढहा दिया था। जहां अब केवल इसके धूल फांकते खंडहर बाकी रह गए हैं। यही नहीं लाहौर में एयर-इंडिया के दफ्तर पर हमला हुआ था और भारत विरोधी नारे लगाए गए थे। इसके बाद पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने भारतीय उच्चायुक्त को तलब किया था और बाबरी मस्जिद विध्वंस पर कड़ा ऐतराज जताते हुए मस्जिद का पुनर्निर्माण जल्द करने की मांग की थी।

आज विडम्बना देखिये कि बाबरी पर शोर मचाने वाले पूरे विश्व भर के मुसलमान और वामपंथी पत्रकार मौन साधकर बैठ गये हैं। इसके उलट यदि भारत में किसी एक सडक पर किसी मजार को किसी भी कारण जरा सी क्षति हो जाये तो यह लोग आसमान को सिर पर उठा लेते है। जबकि एक तरफ ये भी कहते है कि इस्लाम में बुतपरस्ती हराम है।

कहा जाता है कि पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने जब पाकिस्तान बनाया था, तो कहा था कि पाकिस्तान में रहने वाले लोग अपनी अपनी इबादतगाहों, मस्जिदों या मंदिरों में जाने के लिए आजाद हैं। किसी का मजहब क्या है, इसका हुकूमत से कोई ताल्लुक नहीं है। लेकिन जिन्ना के सामने से ही जिन्ना के इन दावों का दम निकल चुका था। क्योंकि पाकिस्तान में रहने वाले अल्पसंख्यकों का क्या हाल है पूरी दुनिया इससे वाकिफ है। लेकिन सिद्धू समेत भारत में रहने वाले अनेक बुद्धिजीवी दिन रात पाकिस्तान की तारीफ के कसीदे पढ़ते रहते हैं। आज बहुत सारे लोगों को ये पाकिस्तान से आई एक छोटी सी खबर लग रही होगी। लेकिन हमें लगता है कि इस खबर को बहुत गंभीरता से लेना चाहिए। ***- जारी पृष्ठ 7 पर***

.....पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने जब पाकिस्तान बनाया था, तो कहा था कि पाकिस्तान में रहने वाले लोग अपनी अपनी इबादतगाहों, मस्जिदों या मंदिरों में जाने के लिए आजाद हैं। किसी का मजहब क्या है, इसका हुकूमत से कोई ताल्लुक नहीं है। लेकिन जिन्ना के सामने से ही जिन्ना के इन दावों का दम निकल चुका था। क्योंकि पाकिस्तान में रहने वाले अल्पसंख्यकों का क्या हाल है पूरी दुनिया इससे वाकिफ है। .....

लोक संघ सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित
सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019-20 की तैयारियों के लिए

महाशय धर्मपाल प्रतिभा विकास संस्थान

www.pratibhavikas.org पर

ऑनलाइन पंजीकरण आरम्भ

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019-2020 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज परीक्षा में भाग लेना चाहते हैं किन्तु आर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा की तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों से शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के प्रशिक्षण हेतु ऑनलाइन पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। पंजीकरण करने के लिए इच्छुक प्रतिभावान छात्र-छात्राएं www.pratibhavikas.org पर लॉगइन करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें अथवा dss.pratibha@gmail.com पर ईमेल करें। - ***व्यवस्थापक***

आर्यजनों से निवेदन है कि इस सूचना को अधिक से अधिक संख्या में अपने व्हाट्सएप्प ग्रुप, ट्वीटर हैंडल, फेसबुक, टेलिग्राम आदि सूचना माध्यमों से सोशल मीडिया पर प्रचारित प्रसारित करें, जिससे अधिक से अधिक प्रतिभावान छात्र-छात्राएं अपना पंजीकरण करा सकें और आर्यसमाज की नि:शुल्क सेवा का लाभ प्राप्त कर सकें। - *महामन्त्री*

त्रिदिवसीय पूर्णिमा महोत्सव सम्पन्न

पूर्णिमा सत्संग समिति द्वारा गत 30 वर्षों से पूर्णिमा पर्व पर विशेष आयोजन करने की परंपरा चली आ रही है। 18 मई, 2019 को त्रिदिवसीय पूर्णिमा महोत्सव मनाया गया जिसमें आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री ने ईश्वर, धर्म, पाखण्ड-खण्डन, गृहस्थ आश्रम पर बहुत ही सारगर्भित प्रवचन दिए। भजनोपदेशक पंडित दिनेश दत्त आर्य जी द्वारा मधुर भजनों की प्रस्तुति अत्यंत आनंददायक सिद्ध हुई। इस अवसर पर आर्यसमाज टेलीफोन डायरेक्ट्री का विमोचन आर्यसमाज कोटा जंक्शन के भूतपूर्व प्रधान, मंत्री, कोषाध्यक्ष, श्रीमती रेखा गुप्ता, श्री अनिल गुप्ता, वैदिक विद्वान बाबूशिव नारायण उपाध्याय व राजेंद्र मुनि जी ने किया। - ***राजेंद्र मुनि, संरक्षक***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज नोएडा, सै. 33

जिला- गौतमबुद्ध नगर (उ. प्रदेश)

प्रधान : श्री एम.एल. सरदाना
मन्त्री : श्री विजेन्द्र कठपालिया
कोषाध्यक्ष : श्री नरेन्द्र सूद

महिला आर्यसमाज सै. 33 नोएडा

प्रधान : श्रीमती गायत्री मीना
मन्त्री : श्रीमती मधु भसीन
कोषाध्यक्ष : श्रीमती सन्तोष लाल

आर्यसमाज नानपारा,

जिला- बहराईच (उ.प्रदेश)

प्रधान : श्री लालता प्रसाद आर्य
मन्त्री : श्री आनन्द कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष : श्रीमती कल्पना आर्य

प्रवेश आरंभ

प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, अनुशासन, चरित्र निर्माण के लिए आर्ष विद्यालय श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में **शिक्षा सत्र 2019-20** हेतु **एक से आठवीं** कक्षा तक प्रवेश प्रक्रिया आरंभ **7 से 14 वर्ष** की आयु के बच्चों के लिए न्यूनतम शुल्क में शुद्ध, सात्विक भोजन एवं सुंदर आवास सहित उत्तम शिक्षा की व्यवस्था की जाएगी। निराश्रित बालकों को शिक्षा व अन्य सुविधाएं नि:शुल्क प्रदान की जाएंगी।

संपर्क करें:- श्री चंद्रदेव आचार्य
श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ राजस्थान
मो. 09414109126, 9414396017

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

पृष्ठ 6 का शेष

अब चुप क्यों हैं बाबरी पर शोर .....

क्योंकि 1947 में जब पाकिस्तान बना था, उस वक्त वहां 23 फीसदी गैर-मुस्लिम थे। लेकिन अब वहां पर सिर्फ 3 से 4 फीसदी अल्पसंख्यक ही बचे हैं। गजब देखिये किसी देश की आबादी का 20 फीसदी हिस्सा अगर गायब हो जाए और कोई आवाज तक न उठे तो ये सवाल तो बनता है कि पाकिस्तान के करीब 20 फीसदी गैर मुस्लिम कहां चले गए? इसका जवाब ये है कि गैर मुस्लिमों का या तो जोर-जबरदस्ती से धर्म बदल दिया गया या फिर उन्हें मार डाला गया।

आजादी के बाद 1951 में पाकिस्तान में करीब 15 फीसदी हिंदू समुदाय के लोग रहते थे। यानी उस वक्त पाकिस्तान में हिंदुओं की जनसंख्या करीब 50 लाख थी। पाकिस्तान में 1998 के बाद अब जाकर जनगणना हो रही है। और उसमें अभी ये पता नहीं चल पाया है कि अब पाकिस्तान में कितने हिंदू और सिख बचे हैं। ये सब वो है जिनके लिए न कोई संयुक्त राष्ट्र में जाता जिनके लिए न कोई साहित्यकार, कोई लेखक या कोई फिल्मकार अपना अवॉर्ड वापस करता। इसी कारण देखते-देखते कराची में पारसियों, यहूदियों के धर्म स्थल बंद कर दिए गए। बहुत से जैन और हिंदू मंदिरों को या तो तोड़ दिया गया या फिर उन पर भूमाफियाओं ने कब्जे कर लिए गये। पाकिस्तान में गैर मुस्लिमों पर धर्म के आधार पर हिंसा होना कोई नई बात नहीं है। बताया जाता है कि 2012 से 2013 के बीच में ही पाकिस्तान में सांप्रदायिक हमलों की कम से कम 200 घटनाएं हुई थीं, जिनमें 700 से ज्यादा लोग मारे गए थे। और आज भी वहां ऐसे अत्याचार लगातार हो रहे हैं। लेकिन पाकिस्तान प्रेम में डूबे बुद्धिजीवी चुप हैं। मौन हैं। इन्हें सिर्फ भारत में असहिष्णुता नजर आती है। इस कारण इसे ढोंग न कहकर इनका सीधा एजेंडा कहना चाहिए जो पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत को बदनाम करने के लिए चलाया जा रहा है।

शोक समाचार

श्री नरेश पाल आर्य जी को पितृशोक

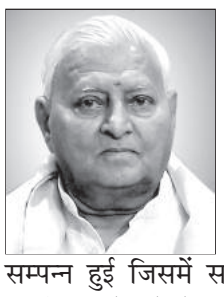

आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 के प्रधान श्री नरेशपाल आर्य जी के पूज्य पिता श्री सत्यपाल आर्य (गुप्ता) जी का 31 मई, 2019 को लगभग 78 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ निगम बोध घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा मंगलवार 4 जून को आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 में सम्पन्न हुई जिसमें सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री श्रीकान्त शास्त्री को मातृशोक

गुरुकुल गौतम नगर के वरिष्ठ स्नातक श्री श्रीकान्त शास्त्री जी की पूज्यमाता श्रीमती हंसनी देवी जी का 31 मई, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 1 जून को ग्रीन पार्क शमशान घाट पर किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 4 जून को आर्यसमाज ग्रीन पार्क में सम्पन्न हुई जिसमें गुरुकुल परिवार एवं निकटवर्ती आर्यसमाजों के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री विजय दीक्षित जी को पितृशोक

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली मे मन्त्री श्री विजय दीक्षित जी के पूज्य पिता श्री पीताम्बर दीक्षित जी का दिनांक 25 मई, 2019 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 5 जून को उनके पैतृक निवास गांव दुधौला, बल्लभगढ़ में सम्पन्न हुई।

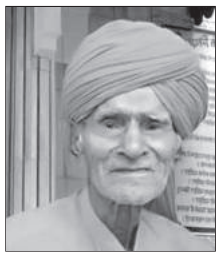

स्वामी सर्वदानन्द जी का निधन

गुरुकुल धीरणवास, हिसार के कुलपति स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का 3 जून, 2019 को रात्रि 9:30 बजे निधन हो गया। वे लगभग 90 से अधिक आयु के थे। उनका अन्तिम संस्कार 4 जून को सायं 6 बजे गुरुकुल धीरणवास में ही सम्पन्न हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 3 जून, 2019 से रविवार 9 जनू, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 6-7 जून, 2019

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 5 जून, 2019

प्रथम पृष्ठ का शेष

पर्यावरण संरक्षण हेतु आर्य समाज ....

में माता सीता के साथ लव और कुश यज्ञ किया करते थे। इसी तरह योगेश्वर श्रीकृष्ण यज्ञ प्रेमी थे और महाभारत काल में पाण्डवों ने कई बार बड़े-बड़े यज्ञ किए। यह सब जानते हैं कि पाण्डवों के राजसूय यज्ञ में स्वयं श्रीकृष्ण ने झूठे पत्तल उठाने की सेवा की थी। हमारे जन्म से लेकर मरण तक सोलह संस्कार यज्ञ से ही पूर्ण होते हैं। इससे पता चलता है कि हमारी संस्कृति और सभ्यता का मूल आधार यज्ञ है।

दुनिया में जितने भी मत, मजहब, संप्रदाय, संगठन हैं, सभी किसी-न-किसी रूप में यज्ञ अवश्य करते हैं। गुरुद्वारों में धूपबत्ती का जलाना, चर्च में मोमबत्ती का जलाना, मस्जिदों में लोबान का जलाना आदि सब यज्ञ के ही विकृत और छोटे रूप हैं। हिंदु समाज भी अपनी यज्ञ परंपरा को कभी भूला तो नहीं लेकिन उसने यज्ञ की विधि को बहुत छोटा करके सुबह शाम दीपक जलाने को ही यज्ञ मानकर इतिश्री करना आरंभ कर दिया है। हमारे यहां होली-दिवाली, लोहडी, मकर संक्रांति, बैसाखी आदि अनेक पर्व यज्ञ करने की प्रेरणा ही प्रदान करते हैं। यहां पर प्राचीन तथा आधुनिक यज्ञ के संदर्भ में इस सारे वर्णन के पीछे कारण यही है कि प्राचीन समय में शुद्ध, वायु, शुद्ध जल, शुद्ध आहार, शुद्ध विचार, हर तरह से खुशहाल, आशा, उत्साह, उमंग-उल्लास पूर्ण, वीरता-धीरता से युक्त लम्बे जीवन का रहस्य यज्ञ ही था। आज भी अगर इस बिगड़ते पर्यावरण प्रदूषण की महाभयंकर विकराल समस्या के सरल समाधन का कोई उचित साधन होगा तो वह यज्ञ ही है। शुद्ध जलवायु के लिए, प्रकृति में संतुलन के लिए यज्ञ ही एक सरल तथा सरस साधन है। यज्ञ से प्रदूषण समाप्त होता है कि पुष्टि देश-विदेश के वैज्ञानिकों ने भी की है।

यज्ञ के प्रति विचार एवं उदाहरण

1. रूस के वैज्ञानिक श्री शिरोविच ने एक पुस्तक में लिखा है कि गाय के घी को अग्नि में डालने से उससे उत्पन्न धुआं परमाणु विकिरण के प्रभाव को बड़ी मात्रा में दूर कर देता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह प्रक्रिया 'यज्ञ' के नाम से जानी जाती है।

2. वैज्ञानिक परीक्षण में यह तथ्य सामने आया है कि यज्ञ-धूम्र से निकलने वाले अणु रेडिएशन में मौजूद अल्फा, बीटा और गामा पार्टिकल से कॉफी बड़े होते हैं। रेडिएशन पर्टिकल (अणु) आगे बढ़ने के लिए यज्ञ-धूम्र के बड़े पर्टिकल से टकरा कर अपनी ऊर्जा खो देते हैं। इस तरह विकिकरण का प्रभाव बहुत कम हो जाता है। जापान में हुए रेडिएशन के प्रभाव को यज्ञ के माध्यम से कम किया जा सकता है। **(राजस्थान पत्रिका 24/3/11)**

3. पूना में फर्ग्युसन कॉलेज के जीवाणु शास्त्रियों ने एक प्रयोग किया। उन्होंने 36 गुना 22 गुना 10 घनफुट के एक हॉल में एक समय का अग्निहोत्र किया। परिणाम स्वरूप 8000 घनफुट वायु में कृत्रिम रूप से निर्मित प्रदूषण का 77.5 प्रतिशत हिस्सा खत्म हो गया इतना ही नहीं इस प्रयोग में उन्होंने पाया कि एक समय के अग्निहोत्र से ही 96 प्रतिशत हानिकारी कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। यह सब यज्ञ की पुष्टीकारक गैसों से ही संभव हुआ है। **(अग्निहोत्र)**

4. जलती शक्कर में वायु शुद्ध करने की बहुत बड़ी शक्ति विद्यमान है। इससे चेचक, हैजा, क्षय आदि बीमारियों तुरंत नष्ट हो जाती है। मुनक्का, किशमिश आदि फलों को (जिनमें शक्कर अधिक होती है) जलाकर देखा तो पता चला कि इनके धुएं से आंत्रिक ज्वर (टायफाईड) के कीटाणु 30 मिनट में और दूसरे रोगों के कीटाणु एक या दो घंटे में नष्ट होते हैं।

(वैज्ञानिक दिलवर्ट वैदिक यज्ञ विज्ञान)

5. विभिन्न रोगों के जंतुओं को समाप्त करने के लिए यज्ञ से सरल तथा सुलभ पद्धति अन्य कोई नहीं है। (एम.मॉनियर, चिकित्सा शास्त्री **(एंसिएंट हिस्ट्री ऑफ मेडिसिन)**

6. शक्कर के दहन से उत्पन्न धुएं में पर्यावरण परिशोधन की विचित्र शक्ति है। इससे क्षय रोग, चेचक, हैजा आदि बीमारियों के विषाणु नष्ट हो जाते हैं।

(वैज्ञानिक दिलवट- फ्रांस)

7. केसर तथा चावल को मिलाकर हवन करने से प्लेग के कीटाणु भी समाप्त हो जाते हैं। **(डॉ. कर्नल किंग)**

आर्य समाज ने किए प्रयोग : यज्ञ-हवन से हटेंगे रोग

1. शुद्ध सामाग्री, शुद्ध समिधा, शुद्ध देशी घी के साथ शुद्ध तन-मन, तथा पूरे विधि-विधान से अगर यज्ञ किया जाए तो आसाध्य से आसाध्य रोग भी यज्ञ से दूर हो जाता है।

- अनिल शास्त्री

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह